वैदिक ज्ञान का संरक्षण हो रहा है डिजिटल

अब वैदिक हैरिटेज पोर्टल पर सुनें वेद ज्ञान, वैदिक ऋचाएं व मंत्र

- **तीन लाख पांडुलिपियां लाई गईं डिजिटल माध्यम में**

नई दिल्ली, 14 जुलाई (प्रियंका सिंह) : वैदिक ज्ञान की प्राचीन धरोहर को संजोने के उद्देश्य से संस्कृति मंत्रालय ने एक पहल की है, जिसके तहत वैदिक ज्ञान की परंपरा का डिजिटल संरक्षण किया जा रहा है। इस परियोजना की रचना और विकास का कार्य संस्कृति मंत्रालय ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र को दिया है। आईजीएनसीए द्वारा वैदिक हैरीटेजजीओवी.इन वेबसाइट तैयार की गई है। वेबसाइट में वेदों में उल्लिखित संदेशों और संवाद को आधुनिक संदर्भ से इस परंपरा का संरक्षण किया जा रहा है। इसके तहत अब तक वैदिक साहित्य की खोजी गई लगभग तीन लाख पांडुलिपियों का डिजिटल संरक्षण किया गया है। इसके अलावा 10 हजार से अधिक मंत्र वेबसाइट पर अपलोड किए गए हैं। इसके साथ ही वैदिक ऋचाओं, मंत्रों एवं सामग्रियों को पोर्टल पर डाला गया है। इसके लिए देशभर से चार आश्रमों की पहचान की गई थी, जिनके सहयोग से वैदिक मंत्रोच्चारण की परंपरागत मौलिक प्रक्रिया, शुद्ध लय, उच्चारण, स्वर और ध्वनि आदि को ऑडियो और वीडियो रूप में संरक्षित किया गया है। बता दें कि यूनेस्को ने साल 2008 में भारत के वैदिक मंत्रोच्चार को मानवता के संदर्भ में अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर घोषित किया था। इसी को देखते हुए मंत्रालय ने वैदिक ज्ञान को संरक्षण करने का निर्णय लिया है।

आईजीएनसीए के वेबसाइट के निदेशक प्रतापानंद झा ने बताया कि मंत्रालय की तरफ इस वेबसाइट को बनाने का कार्य वर्ष 2014 में दिया गया था। इस कार्य को पूरा करने में विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों की मदद ली गई है।

तीन चरणों में होगा काम पूरा

वैदिक हैरिटेज पोर्टल को बनाने का कार्य तीन चरणों में पूरा करने की योजना बनाई गई है। जिसमें से पहला चरण पूरा हो गया है। वहीं मंत्रालय में दूसरे चरण का भी प्रपोजल पास हो गया है। इसमें वेदांत, उपनिषद, पुराण और अन्य ग्रंथों पर काम किया जाएगा। साथ ही पुराण और इतिहास (रामायण और महाभारत), धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, अगम और दर्शन इत्यादि विषयों पर काम होगा। जिसके लिए मंत्रालय की तरफ से तीन साल का समय दिया गया है। साथ ही इस चरण को पूरा करने के लिए छह करोड़ का बजट पास हुआ है।